

मोहन आन बसे नैनो में
निंदिया रात-रात ने आये ॥२॥

द्वैल दबीलो बाँको बिहारी
सपनों में दिख जाये हाँ-हाँ सपनों में दिख जाये
सारी रतियाँ करवट बदलूँ
कहू समझने आय हाँ-हाँ कहू समझने आय
मोहन आन-----

सास-नंद के लाना खाऊँ
ससुरा मोहे सताय हाँ-हाँ ससुरा मोहे सताय
जेठ-जिठानी रेंसे हो गये
देखई सें बीराँय हाँ-हाँ-देखई सें बीराँय
मोहन आन----

जीवो दूभर-भउओ "श्रीबाबाश्री" अब
कैसे खुद समझाऊँ-हाँ-हाँ-कैसे खुद समझाऊँ
बिना मिले मोहे चैन ने आवे
कैसे मैं बतलाऊँ-हाँ-हाँ-कैसे मैं बतलाऊँ
मोहन आन-----